P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue- X* June -2016

# भारत में प्रशासनिक सुधार : वर्तमान समय की आवश्यकता

**चन्दा सोलंकी**
शोध छात्रा,
राजनीतिक विज्ञान विभाग,
एम0 डी0 एस0 यू0,
अजमेर

**सारांश**

प्रशासनिक सुधारो के माध्यम से हमें लोकसेवा के एक ऐसे दर्शन का विकास करना होगा जो समाज की आकांक्षाओं के अनुरूप्ज्ञ हो और नौकरशाही में एक नई चेतना प्रवाहित हो तथा देश राजनीतिक व सामाजिक बुराइयों के कारागार से मुक्त हो सके। प्रशासन में सुधारो के माध्यम से दश को संतुष्ट और परिणामोन्मुख कार्मिक प्राप्त हो सके।

**मुख्य शब्दः** प्रशासनिक, मशीनरी की कार्यकुशलता में कमी है। प्रशासन में व्याप्त राजनीतिक बुराइयों यथा भ्रष्टाचार, जनविमुखता आदि का मूल्यांकन। प्रशासनिक सुधारो की आवश्यकता के परिपेक्ष्य में स्वयं से शुरूआत के साथ अन्य उपायो की प्रासंगिकता।

**प्रस्तावना**

पिछले दिनों भारत को सर्वोच्च सेवा कही जाने वाली सिविल सेवा से सम्बंधित दो खबरे आई एक तो यह कि हर साल की तरह इन परीक्षाओं का परिणाम आया, किन्तु परिणाम का इंतजार नहीं रहा। दूसरी हाल में प्रशासनिक सुधार और जन शिकायत विभाग का एक सर्वेक्षण हुआ जिसने नौकरशाही के काम की स्थितियाँ और उनकी मनोदशा पर अहम जानकारियाँ उजागर की। इस रिपोर्ट के अनुसार 35 प्रतिशत नौकरशाह अपनी सेवा से असंतुष्ट है।

**प्रशासनिक सुधार की आवश्यकता क्यों**

नौकरशाही असंतुष्टता के साथ सियासी हस्तक्षेप, भ्रष्टाचार प्रमोशन पोस्टिंग में भेदभाव प्रशासनिक तंत्र को कमजोर बनाते है। साथ ही राजनीतिज्ञों ने अपने स्वार्थ के लिए नौकरशाही को जातिवादी और साम्प्रदायिक बना दिया है। पिछले कुछ दशकों में अधिकांश सेवक निरकुंशता, भ्रष्टाचार, जनविमुखता और घमंड के पर्याय बन गए हैं।

हांगकांग के पालिटिकल और इकोनॉमिक रिस्क कंसल्टेंसी द्वारा 2009 में एक सर्वेक्षण किया गया जिसके अनुसार एशिया की 12 बड़ी अर्थ व्यवस्थाओं भारत के सिविल सेवक सबसे ज्यादा कर्महीन है।[1]

**विकास प्रशासन की अवधारणा**

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही विकास प्रशासन को समुचित दिशा और तीव्र गति प्रदान करने के उद्देश्य से विकास प्रशासन की अवधारणा को प्रारम्भ से ही अपनाया गया लेकिन वर्तमान समय में तेजी से बदलते सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य ने विकास प्रशासन की अवधारणा को बदल दिया है। विकास प्रशासन का अर्थ सरकार द्वारा लागू की गई उन नीति और योजनाओं से है जिनके माध्यम से वह विकासात्मक उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करता हैं और यह उद्देश्य तब तक तक पूरे नहीं हो सकतें जब तक प्रशासनिक मशीनरी कार्यकुशल ना हो। वर्तमान में जिस तरह हमारे देश भ्रष्टाचार से जूझ रहा है, विकास की धारणा कमजोर पडती जा रही है।[1]

1. प्रशासनिक सुधार कैसे हो –सुधारों की शुरुआत हमें खुद से करनी होगी। जैसा कि चाणक्य नीति के अनुसार (सरकारी) धन का दुरुपयोग ना करना उसी तरह नामुमकिन है जैसे जीभ पर रखी चीनी को ना चखना।[3]
2. शासकीय गुप्त बात अधिनियम 1923 को लचीला बनाना।
3. प्रशासन में आधनिक तकनीकों का प्रयोग करना।
4. प्रशासनिक कार्यकुशलता के मानदंड तय करना।
5. प्रशासको की भूमिका को अधिक उत्तरदायी बनाना आदि। सुधारों के माध्यम से प्रशासन मे पारदर्शिता ला सकते हैं। ना सिर्फ क्रांति की मशालें जलाकर नारे लगाकर बल्कि भ्रष्टाचार की जंग को जीतने के लिए खुद में भी बदलाव जरुरी है।[4]

सुशासन की दिशा में प्रशासनिक सुधार एक निरतंर प्रक्रिया है। आंकडे बताते है कि 1992 से अब तक 73 लाख करोड़ रुपये घोटाले की भेंट चढ गए। इतनी बडो रकम से हम नरेगा जैसी 90 स्कीम और शुरु कर सकते थे। करीब 14 करोड मकान बना सकते है ढाई करोड के प्राइमरी हेल्थ सेंटर बना सकते थे। यानि पूरे देश को तस्वीर बदल सकती थी।[5]

आंकडों के मुताबिक, स्विसबैंक में 65223 अरब रूपयें भारतीयों के जमा है जो कि हमारे जी डी पी का 6 गुना है।[6]

अतः विभिन्न प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से भारत की राजनीतिक और आर्थिक छवि बदल सकते है।

**उद्देश्य**

भारत की छवि को उज्ज्वल बनाने हेतु आव"यक है कि दे"ा में व्याप्त प्र"ाासनिक बुराइयों पर ध्यान दिया जाए इस दि"ाा में युवाओं को प्रेरित करना और प्र"ाासनिक सुधारो को प्रभावी रूप से क्रियान्वत करवाना ही इसका उद्दे"य है। जिस तरह से दे"ा भ्रष्टाचार और घोटालों की गिरफ्त में आ चुका है, उससे तो विकास प्र"ाासन की धारणा ढीली पडती जा रही है। अतः इस दि"ाा में सकारात्मक कदम उठाने के लिए प्रेरित करना मुख्य उद्दे"य है।

**निष्कर्ष**

चाणक्य नीति के अनुसार जब मनुष्य के आस–पास कोई नहीं होता तो वह भ्रष्टाचार की तरफ उन्मुख होता है अतः प्र"ाासनिक तंत्र को सुधारने की शुरूआत हमें स्वयं से करनी होगी। प्र"ाासनिक बुराइयों से निपटने के लिए सरकार ने कई समितियॉ और आयोग बनाए किन्तु आव"यकता इनके प्रभावी रूप से क्रियान्वित होने की है। इसी दि"ाा में जन लोकपाल बिल सरकार का एक सकारात्मक प्रयास है।

**पाद टिप्पणी**

1. Jagran Junction. com 06.10.2010 Indian Administration.
2. विश्व आर्थिक फोरम के 49 वें देशों में भ्रष्टचार के मामले में भारतीय नौकरशाही नीचे से 44 वें स्थान पर रही। डॉ० उमेश चंद्र अग्रवाल, भारत में प्रशासनिक सुधार–एक अध्ययन, प्रतियोगिता दर्पण, 2006
3. I will noy let anyone walk through my mind with their dirty feet. Gandhiji
4. हनुमंत यादव, विकास एवं प्रशासिकन सुधार, 6 अक्टूबर 2009
5. शम्स ताही खान, इंडिया टूडे ग्रुप
6. प्रशासनिक सेवाओं में सुधार का प्रयास डॉ० के० के० शर्मा, प्रतियोगिता दर्पण, अक्टूबर 2004

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

**पुस्तकें**

1. जॉन मांटरों : भ्रष्टाचार।
2. पालखीवाला नानी : हम हिन्दुस्तानी
3. भट्टाचार्य, मोहित : लोक प्रशासन के नये आयाम।
4. भट्टाचार्य, मोहित : न्यू होरिजन ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, जवाहर बुक डिपो।

**पब्लिकेशन**

1. उमेश चंद्र अग्रवाल, भारत में प्रशासनिक सुधार, प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर, 2006
2. डॉ० के० के० शर्मा, प्रशासनिक सेवाओं में सुधार का प्रयास, प्रतियोगिता दर्पण, अक्टूबर 2004
3. रविन्द्र कुमार, प्रशासिनक सुधार वर्तमान समय की आवश्यकता, प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर 2005

**समाचार पत्र**

1. इंडिया टूडे
2. जनसत्ता
3. दैनिक भास्कर
4. सहारा समय

**मीडिया**

1. Jagran Junction. com 06.102010 Indian Administration
2. ZEE News